# ईजा और पहाड़

मीना पाण्डेय
कवि एवं साहित्यकार
srujanse.patrika@gmail.com

कई बार हिली पर नहीं टूटी ईजा
आँचल में छिपाती रही वक्त-बेवक्त के आँसू
भीतर से दरक रहा पहाड़
बाहर से अड़िग ही बना रहा
तमाम विवशताओं के साथ
मैं जितना दूर आई
उतने पास आते गए
ईजा और पहाड़.

पुरानी धोती के टुकड़ों में बंधे
गहत-भट्ट जितनी
बंटती रही ईजा
जैसे बंटती है धूप
बंटती है बरसात
बंटता है पहाड़
अपने नौनिहालों के बीच
शहर की किसी 'पहाड़ी गली' में
छौंक, अन्वार और बोली में लटक भर
बचे रह जाते हैं
ईजा और पहाड़.

कमर में दरांती खौंस
पहाड़ से बतियाति ईजा की उम्र
उसकी हरिति देह से
घास लपकते गुजर गई
पहाड़ दोहराता रहा
उसकी न्यौली
देता रहा धीरज
अलग-अलग होकर भी
नियती में एक से रहे
ईजा और पहाड़.

खाली पड़े मकानों की
गेरुई दीवार पर
बिस्वार सी उतरती ईजा
'धैं अब' 'धैं अब' कहती
आजीवन ढ़ोती रही
दर्द का पहाड़
पहाड़, खड़े रहने की नियति लिए
बंधाता रहा ढ़ांढस

मरते नहीं
चाल, ढ़ाल, निश्वास में
करवट बदलते रहते हैं
हमारे भीतर-बाहर
ईजा और पहाड़.

www.khatokitaabat.com
खतोकिताबत
साहित्य को समर्पित एक प्रयास
खतों के जरिए करिए
भावनाओं का इजहार
digitalkhatokitabat@gmail.com
फेसबुक : facebook.com/Khatokitabat
यूट्यूब : khatokitabat Digital